



## 145925 - अगर औरत शुक्रवार के दिन जुहर की नमाज़ पढ़े तो क्या वह जुहर की नियमित सुन्नतें भी पढ़ेगी?

### प्रश्न

जैसा कि सर्वज्ञात है कि एक महिला का अपने घर में नमाज़ पढ़ना मस्जिद में नमाज़ पढ़ने से बेहतर है, जिसमें जुमा की नमाज़ भी शामिल है। यह भी सर्वज्ञात है कि अगर वह (जुमा की) जमाअत में उपस्थित नहीं होती है, तो वह जुमा के बजाय जुहर की नमाज़ पढ़ेगी। मेरा प्रश्न यह है : यदि वह जुमा के बजाय जुहर की नमाज़ पढ़ती है, तो क्या वह जुहर की नमाज़ की नियमित सुन्नतें भी पढ़ेगी, जैसा कि वह हर दिन करती है? या यह कि शुक्रवार का हुक्म अलग है?

### विस्तृत उत्तर

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान केवल अल्लाह तआला के लिए योग्य है।

जुमा की नमाज़ महिलाओं पर फ़र्ज़ नहीं है, लेकिन अगर महिला मस्जिद में जाती है और जुमा की नमाज़ पढ़ती है, तो यह उसके लिए जुहर की नमाज़ के लिए पर्याप्त है।

इफ़ता की स्थायी समिति के विद्वानों ने कहा :

“अगर कोई महिला जुमा के इमाम के साथ जुमा की नमाज़ पढ़ती है, तो यह उसके लिए जुहर की नमाज़ की तरफ़ से पर्याप्त है। इसलिए उसके लिए उस दिन जुहर की नमाज़ पढ़ना जायज़ नहीं है। लेकिन अगर वह अकेले नमाज़ पढ़ती है, तो उसके लिए केवल जुहर की नमाज़ पढ़ना जायज़ है। उसके लिए जुमा की नमाज़ पढ़ना जायज़ नहीं है।” उद्धरण समाप्त हुआ।

“फ़तावा अल-लज़नह अद-दाईमह” (7/337)।

यदि वह जुमा के दिन अपने घर में जुहर की नमाज़ पढ़ती है, तो वह जुहर की (फ़र्ज़) नमाज़ से पहले और बाद की नियमित सुन्नतें भी पढ़ेगी, जैसा कि वह हर दिन करती है।

और अल्लाह तआला ही सबसे अधिक ज्ञान रखता है।